बैशाखमे दलानपर

बैशाखमे दलानपर

सन्दीप कुमार साफी

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

Ist edition 2014 of Sandeep Kumar Safi's Baishakh Me Dalan Par - Autobiography-Poems-Seed Stories- Thoughts in single binding- published by Shruti Publication, 8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi - 110008

ISBN:
Price: Rs. 200/- (INR)-

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Designed by: Prity Thakur

Printed & Typeset at: Ajay Arts, Delhi-110002

Sole Distributor :
Pallavi Distributors, Supaul,Ph.+918539043668

समर्पण

अपन पिता श्री सीताराम साफी आ माता श्रीमती सीता देवी केँ समर्पित।

भाइजी आनन्द कुमार झा, नाटककार लेल।

बैशाखमे दलानपर

अनुक्रम

आत्मकथा खण्ड

(मैथिलीमे दलित आत्मकथाक सर्वथा अभाव रहल अछि। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा मिथिलाक साहित्य, समाज आ संस्कृतिकेँ हिलोरैत ओइ अभावक पूर्ति करैत अछि।- गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह)

7

आत्मकथा

जीवन एगो संघर्ष होइत अछि, संघर्षमय होइत अछि। ऐ संघर्षमे कियो-कियो आगू निकलि जाइत अछि तँ कियो अप्पन जीवनमे बहुत पाछू छूटि जाइत अछि।

ओही संघर्षमय दुनियाँमे एगो हम छी, जिनकर नाम अछि संदीप कुमार साफी माने किरण। स्कूलमे सन्दीप नामसँ चिन्हल जाइबला अओर गाममे सभ किरण नामसँ पहचानैए। ग्राम+पोस्ट मेंहथ, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनीक रहनिहार हमर जन्म निर्धन गरीब परिवारमे भेल। हम जातिक धोबी छी, हरिजन (दलित) छी। गाममे सभक कपड़ा धो कऽ माँ-बाबू हमरा सभक पालन-पोषण केने अछि। हम चारि भाइ-बहीन छी, जइमे हम सभसँ बड़का छी, तइसँ छोट हमर भाइ-बहीन सभ अछि। हमर जन्म ०७.०६.१९८४ ई. मे भेल। ओइ जमानामे सस्ता सभ किछु, तैयो हमरा सबहक भरन-पोषण झूर-झूरइतो चलए। अ-आ सँ कबीर कान तक हम सभ दुखीरामसँ पढ़लौं। किछु दिन बाद बाबूजी सरकारी स्कूलमे नाम लिखा देलक। सरकारी स्कूलमे पढ़ाइ चलै तँ ठीके-ठाक मुदा हम सभ ओतेक किछु बुझि नै पबिऐ। ओहेन गारजनो होसगर नै जे देखबितए जे की लिखलएँ, की सिखलएँ। मुदा धीरे-धीरे आगू बढ़लौं।

छोटमे माए एकटा बकरी किनलक जे ओकरोसँ किछु रुपैया आमदनी हएत तँ कहुना गुजर-बसर हएत। थोड़ेक दिन बकरी सेहो चरेलौं अओर बकरी बेचि हमर माँ ओहीसँ एकटा बाछी लेलक जे ओइसँ दूधक आमदनी हएत आ ओइ पाइसँ अपन परिवार सुखीसँ गुजर करब।

ई सभ काज करैत बाबूजी संगे लोकक ऐठाम कपड़ा पहुँचेनाइक सेहो काज करैत छलौं।

पिछला पाँच दस सालमे जमाना बहुत आगू बढ़ि गेल। पहिले एते बोइन नै भेटैत छलै जेतेक अखुनका समएमे भेटैत अछि। पहिने एक मोटा कपड़ा धोइ छल हमर माँ-बाबू तँ गिरहस्त सभ पाँच सेर धान नै तँ दू किलो आँटा दैत छलै। कियो कपड़ा धुआइ तरे पाइयक आमदनी नै रहलासँ मजूरीमे दू-तीन किलो अल्लूए दऽ देलक। पहिने पाइ महग छलै आ अन्न-पाइन सस्ता छलै।

गाममे सबहक माय-बाबू इस्कूल भेजै मुदा हम जाइ लोकक कपड़ा पहुँचाबऽ, तइयो साँझका टेममे अंगनामे बोरा बिछा कऽ पढ़ैले बैसए हमर पिसियौत भाय राजू भैया, तखन हमहूँ पढ़ैले आबी तँ दू-कानसँ बीस कान तक सिखलौं। ओकरा बाद अप्पन गामक इस्कूलमे नाम लिखा देलक, हेडमास्टर छल पहिने कोइलखक यादवजी, हुनका कहि बाबू, जे एकरा कनी देखबै। किछु दिन अहिना समए कटल, चौथा-पचमामे बढ़ला बाद किताब पढ़ला किछु आबि गेल तँ गारजीयन कहलक जे चलि जा बौआ पीसा संगे, ओतै नेपालमे रहिहऽ। गामपर खर्चाक दिक्कत तँ हेबे करइए, से नै तँ ओतै काज-राज करिहऽ अओर ओतै रहिहऽ। पढ़ाइ-लिखाइ आब छोड़ऽ। पढ़ि-लिखि कऽ की हेतै। १९९४ ई. क समएमे हम चलि गेलौं नेपाल। ओतै दीदी संगे रही, सभ दिन कपड़ा धोइ अओर संगे पहुँचाबैले जाइ। अओर आबी तँ लकड़ी चुल्हापर भानस करी। भोरे तीन बजे उठी कपड़ा धोइले। ओइ समए हमर उमेर बुझू जे ११-१२ कऽ छलए। किछु दिन ओहू ठाम गुजारलौं। तकरा बाद हम फेर गाम एलौं। हमर बाबू कहलनि जे आब नै जा, किछु दिन पढ़ऽ। कमसँ कम मैट्रिको तक पढ़ि लेबऽ तँ कतौ ने कतौ सरकारी नोकरी भइये जेतऽ। हमरा जेतबे जुड़त ओतबेमे हम

गुजर करब मुदा तूँ पढ़ऽ। तकरा बाद हम कोठिया इस्कूलमे नाम लिखेलौं। ओइ ठाम छठासँ किलास चलै छलै। फेर थोड़ेक दिन गामेमे रहि कऽ माल-जाल चरा कऽ हाइस्कूल तक गेलौं। मुदा समए एहेन आएल जे फेर हम पढ़ाइ छोड़ि पंजाब चलि गेलौं। ओइ समएमे हम छलौं नौमामे। गेलौं ओइ बास्ते जे हमरासँ छोट बहीन छल, घरक गारजन कहलक जे बौआ गाममे रहलासँ आब किछु नै हेतौ, से नै तँ चलि जा लोक सभ संगे बड़का कक्का लग चण्डीगढ़। कतौ नोकरी धरा देतऽ, कइहक हमर नाम जे बाबू कहलक यऽ। हमर कक्का बित्तन साफी जे बी.ए.क डिग्री प्राप्त केने छलए, वएह सोचि हमर बाबू हुनका लगमे पठौलनि जे ओकरा कनीक बुइध छै, कतौ नीक-नीक नोकरी पकड़ा देतै। मुदा हमरा लगमे कोनो सर्टिफिकेट नै रहए, से हमरा कतौ छोटो-मोटो काजपर नै राखए। कोनो औफिसोमे नै राखए जे ई तँ पढ़ल लिखल नै अछि, सभ दफतरमे से कहए। आखिरीमे काका एगो प्रेस आइरनक दोकान कऽ कहलक, एतै आइरन कर। नया आइरनक दोकान, कोइ ग्राहक आबै, कियो नै आबै। एक-दू महिनाक बाद काका हमरापर शक करए लागल जे ई पाइ कमाइ अइ मुदा हमरा नै दइए। हमरा मनमे बहुत दुख हुअए जे हम कतऽ आबि गेलौँ, खेनाइ खाइ लऽ जाइ तँ कहए जे दोकानक भाड़ा आब तोरे भरऽ पड़तऽ चाहे दोकान चलऽ या नै चलऽ। ई सभ सुनि मन व्याकुल भेल जे आब ऐठाम हमरा रहलासँ कोनो फाएदा नै हएत। आब एतऽसँ जाइए पड़त। ओही ठाम गामक कतेक लोक रहै छल, तेकरा कहि-सुनि हम कोठीमे काज करए लगलौं। एक महिना भेल तँ गाम जाइ कऽ भाड़ा भऽ गेल। एलौं काका लगमे जे हम गाम जा रहल छी। तँ काका कहलक, रुकि जा, हम टिकट बना दै छिअ। एक दू दिन रुकि जा। गामक लोक जाइत छै, तेकरा संगे हम गाम पठा देबऽ।

तइ बिच हमरा संग एगो घटना भऽ गेल जे हमरा पएरमे आगि लागि गेल। हमरा पूरा पएरमे, पएरसँ एड़ीसँ जांघ तक झड़कि गेल। आब हम बड़का समस्यामे फँसि गेलौं। उ घाव हमरा तीन महिना तक घिघरी कटेलक। असगरे साइकिलसँ एक पएरे पाइडिल मारि कऽ ऊँच-नीच रस्तापर सँ जाइ छलौं दवाइ कराबैले चण्डीगढ़ शहरसँ दूर छै गाम धनास, ओइठाम। कम पाइमे डाक्टर दवाइ दै छलै। सप्तामे तीन बेर जाइ छलौं दवाइ कराबैले। जेहो रुपैया कोठीसँ कमा कऽ अनने छलौं सभ पाइ कक्काकेँ दऽ देलौं। एकर समाचार जखन हमर माँ आ बाबूकेँ पहुँचल तँ बहुत कानल जे कोहुना बौआ केकरोसँ पाइ लऽ कऽ तूँ गाम आबि जो। ओही ठाम छै बुधन अओर कोरैला, तेकरासँ पाइ लऽ कऽ गाम चलि आ। हम गामेपर ओकरा पाइ दऽ देबै। ओही समएमे हमर बोर्ड परीक्षाक फॉर्म भराइ छलए, यएह कातिक अगहन महिनामे हमरा केकरो द्वारा चिट्ठी समाद आएल जे जल्दी गाम आबऽ जे किछु दिन पइढ़ो लेबऽ अओर घाव से छुटि जेतऽ। हमर फॉर्म हमर संगी मनोज पासवान सभ भरि देलक। किछु बुझल ने सुझल, ने गणितक ज्ञान ने संस्कृतक ज्ञान। तैयो परीक्षा मधुबनीमे वाटसन स्कूलमे भेल सन २००० ई. मे, जखन दू महिना बाद रिजल्ट निकलल तखन मनमे जएह धुकधुकी छल सएह भेल। हम परीक्षा पास नै कऽ पेलौं। आब तँ अओर मोन दुखी भऽ गेल जे आब की कएल जाए।

तकरा बाद कोइ ने कोइ कहलक जे संस्कृत बोर्ड सँ परीक्षा दहक। एक बेर बाबू तँ हमर मानलक मुदा माँ कहलक जे आब सभ पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ऽ, चलि जा ममियौत भाए संगे बंगलोर। हम फेर बंगलोर चलि एलौं। ऐठाम काज भेटल खानाक केटरिंगमे, कुक सबहक कपड़ा धोइ कऽ काज भेटल। किछु दिन बाद गामपर सँ हमर विवाहक बातचीतक समाचार आएल जे तूँ गाम आबऽ। फरबरी-मार्चमे हम गाम गेलौं। बाबूजीकेँ कहलियनि जे विवाहमे जे दहेज देतऽ ओइ दहेजसँ

अओर एक सालमे किछु रुपैया अओर लगा कऽ बहिनक कन्यादान सेहो कऽ लेब। किछु भाड़ा-बर्तन अओर ओइमे लगा देबै। ई सभ मजबूरी देख हमर विवाह २००२ मे भेल, पण्डौल गाममे, जइ गामक पड़ोसमे कनी हटि कऽ अछि भवानीपुर गाम, जइ ठाम महादेव उगना रूप धारण कऽ विद्यापतिकेँ दर्शन देने छलनि जे अखन मिथिलामे सुप्रसिद्ध अछि, कवि विद्यापति अओर उगना महादेव। हमर विवाहक पश्चात एक बेर फेर हम संस्कृत बोर्डसँ परीक्षा देलौं, अओर ओइमे हम द्वितीय श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेलौं। हम ई परीक्षा केथाही-रामपट्टी स्कूलसँ देने छलौं २००५ मे। तेकरा बाद पुनः हम अपने गाम लगमे कॉलेज छल शिवनन्दन-नन्दकिशोर महाविद्यालय, भैरवस्थान ओइमे एडमिशन करा कऽ आइ.ए. मे, हम फेर आबि गेलौं बेंगलोर। तकरा बाद ओइ केटरिंगमे आदमी बढ़ि गेलासँ हमरा ओइठाम काज नै भेटल तँ हम फेर एतौ एकटा कोठीमे काज पकड़लौं अओर गाम आबि कऽ इण्टरमीडिएट परीक्षामे फेर शामिल भऽ गेलौं आ अहूमे सेकेण्ड डिवीजनसँ पास भेलौं, कोठीएमे समए बचए तँ पढ़बो करी, किताब गामसँ लऽ कऽ जाइ छलौं।

संग-संग बहिनक कन्यादान सेहो भऽ गेल भगवतीक दयासँ। ओही विवाहमे किछु खर्चा आ कर्जा भऽ गेल बेसी। कोठीमे दू हजार रुपैया दिअए महिना, ओइमे घरक खर्चा अओर ओम्हर अपन पढ़ाइक परीक्षा फीस, पलसमे परिवारक सेहो खर्चा।

फेर बी.ए. मे नाम लिखेलौं अओर फेर चलि गेलौं बंगलौर। हमर विषय छल आर्ट जे कोनो ट्यूशन बिना पढ़ि सकै छलौं। हमरा इण्टरमीडिएटमे हिन्दी विषयमे ज्यादा अंक आएल छल मुदा अपने नै रही गाममे तँ हमर संगी छल राकेश कुमार ठाकुर, लगैमे हजाम, वएह छल हमर फॉर्म भरनिहार, परीक्षा शुल्क जमा केनिहार, हुनका मैथिलीमे

ज्यादा अंक एलै, ओइ वास्ते हमरो उ यएह ऑनर्स विषय रखबा देलक।

गाम एलौं तँ मन किछु पछताइतो छल जे आबक जमानामे आर्टक पढ़ाइ कियो पढ़ै छै, मुदा मैथिलीक जखन नाम सुनलिऐ तखन मन गदगद भऽ गेल। हँ, मुदा किताब भेटल बहुत मेहनति कऽ कए।

हर साल पाँच सएमे किताब खरीदऽ पड़ए, ओहूमे जेरोक्स पन्ना। तेकरा पढ़ि कऽ हम बी.ए. फर्स्ट क्लाससँ २०११ ई. मे पास केलौं ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटा, कामेश्वर नगर दरभंगासँ।

ताऽत हमरा बालो बच्चा भेल। पढ़ाइ संग-संग एकरो सबहक देख-रेख केनाइ माय-बापक दायित्व होइ छै। तखन हम फेर गामसँ बेंगलोर आबि गेलौं।

कतेक बेर पैराशुट रेजीमेंटमे बेंगलोरमे भर्तीमे बहालीमे गेलौं मुदा असफल रहलौं। ऐबेर गाममे एस.टी.ई.टी.बला परीक्षामे सेहो शामिल भेलौं मुदा उहो असफल रहल।

आबि गेलौं बेंगलोर जे आब ओतेक कोनो नीक एजुकेशनो नै अछि जे कतौ नोकरी हएत, तैयो कोनो काजमे लागल छी। भगवतीक दया, आगू हुनका हाथमे छनि। हमरा दूटा बेटा अछि अओर एकटा बेटी, बड़का अछि राजकुमार साफी, छोट बेटा सागर कुमार साफी। तइसँ छोट अछि राज नन्दनी कुमारी। अखन ई सभ आंगनवाड़ी स्कूलमे पढ़ि रहल अछि। ओतेक पाइ अछि नै जे प्राइवेट स्कूलमे धीया-पुताकेँ पढ़ाएब, दिनोदिन महगाइ बढ़ले जाइत अछि। हम सभ बी.पी.एल. कोटिमे शामिल छी। धीरे-धीरे एतबो शिक्षा भेलाक बादो कोनो नोकरी नै भेटैए। लोक कहै छलए जे एतेक पढ़निहार बड़का अफसर होइत अछि मुदा हम सभ किछु नै कऽ पाबि रहल छी।

हमरा संगीतसँ बेसी मिलान रहैत अछि। गीत गेनाइ हमरा बहुत नीक लगैत अछि। मैथिली होइ बा नेपाली बा हिन्दी, हम ओहू गीतकेँ गाबि सकै छी। कीर्तन-भजन केलौं अपने गामघरपर संगी-साथी संग। जीवन एगो घड़ीक सुइया होइत अछि, दिन भरि, राति भरि चलिते रहैए, कखनी बन्द भऽ जाएत किनको नै थाह अछि।

हम अप्पन ऐ मैथिलीक माटि-पानिसँ जुड़ल हर एक बातक सम्मान करब। अप्पन भाषाकेँ ऊँच शिखरपर पहुँचेबाक प्रयास करब।

हम मैथिल छी, मिथिलेमे रहब अओर पोरो साग तोड़ि कऽ गुजर करब। सादा छी सादा रहब। जय मिथिला, जय मिथिला धाम, प्रणाम।

कविता खण्ड

बैशाखमे दलानपर

15

भकजोगनी

भुकुर-भुकुर बत्ती बड़ै

राइतक अन्हरियामे

हाथ-हाथ नै सुझैए

जेबाक अछि टोलपर

कुक्कुर भुकैए झाउ-झाउ-झाउ

साँझक बजैए छअ

हाथमे नै अछि लाठी-ठेंगा

नरहिया करैए सोर

मैझला बाबा गबैए निर्गुण

तमाकुलपर मारै चोट

बौआ कनैए भगजोगनी लए

बड़ैए चाहूँ ओर

पकड़ रोउ, भुल्ला, होकवा

ठहा-ठहै अन्हरियामे लुत्ती

नेने माथपर नारक आँटी

थरथराइ छी हम पछुआरमे

बैशाखमे दलानपर

17

रौदी भऽ गेल

ओह, की पुछै छी समधि

जे छल सब चौपट भऽ गेल

सब गिरहस्तक खेत मुँह बाइब गेल

खेतमे देखलौं दरारि फाटि गेल

पानि बिन धान ओहिना सुखि गेल

डोका सब कतरा घुसि गेल

डकहर सब ओहिना उड़ि गेल

आब ओ कहाँ धारक ओ रेती

धीया-पुता ऐबेर की खेती

ऐबेर तऽ नै अछि जनेरक आशा

की जानि हएत की दशा

अखाढ़ महिना किछु खेत सुखि जाइ

कलयुगकँ देखहीं रौ भाइ

कहैछ हमरा सबहक माय

जे चारि साल अहिना रौदी भऽ गेल

डकही सन पोखरि सुखि गेल

बड़का-बड़का पीपर सुखि गेल

बेलक गाछमे बेलो नै भेल

मालजाल सब पानि बिनु तरसए

मेघसँ एको बेर पानि नै बरसए

जटा-जटिन के गीत सब गाबए

तैयो नै इन्द्र भगवान सब जागए

डबरा-डबरीसँ बेङ सब भागए

बौगुला सब टुकुर-टुकुर ताकए

रबी-राइ मरहन्ना भेल

सौंसे खेतमे केसौरक पंना भेल

बैशाखमे दलानपर

19

आबक दुलारू बेटा

आबक दुलारू बेटा दूध भात नै खाए
जतऽ देखए चुन-तमाकुल ओतऽ दौड़ल जाए
कनी दय- दय- दय

भोर-साँझ नै पढ़ए छौड़ा
धऽ कऽ छिड़िआए
कनियो किछु कहबै तऽ
भुँइए ओँघराए
माइयक बिगारू बेटा छाल्ही भात खाए
इसकूल जाइ नामसँ ओकरा माथा दुखाए
पहिरै लऽ चाही ओकरा
जीन्स पेन्ट टीसट,
दिन भरि अंगनामे एकोबेर ने टिकत
उड़ल रहैए जी ओकरा

टाएल-गुल्लीपर

कखनो देखियौ ओइ खेत तऽ

कखनो बान्हपर

पढ़ैले चाही ओकरा कोपी कगजिया

दुए दिनमे देत कोपी पिलसिन खिया

आबक धीया-पुता बड्ड खच्चर

बापक नाम पुछबै तऽ कहत मच्छड़

संस्कारक हीन भेल

पाइयक चीन्ह भेल

आवारा लुच्चा भीन भेल

बैशाखमे दलानपर

सपनामे देखलौं

भाइ रौ सपनो कतौ सच भेलैए

महीसक पीठपर कहूँ मंच होइए

देखलियौ भरि राति नाच गोपीचन के

अपने छी गुअरटोलीपर

महीस चरैए धारऽ कातमे

ओ कैतकी पूर्णिमाक राति छै

माएनटलबला लाइट छै

छअ कऽ हॉरन पीपर गाछपर बाजि रहल छै

ओ जिलेबी कचरी मुरही

गमछा के ओजरी बनओने छी

रहि-रहि कऽ ढोल मिरदङपर

मुरही के फक्का लगबै छी

भोरे उठलौं महीस घरमे तऽ

गोबरक चोथपर पड़ल छी

कौआ कुचरैए पाहुन अबैए

आइ कौआ कुचरैए

हमर प्रीतम अबैए

जखन हमर प्रीतम ऐता

तखन तोरा हम बिस्कुट खुआएब

बहुत आस लगौने छी

कचक तीमन पकेने छी

मन छल मारा माँछ आनितौं

दुल्हाक मन हर्षित करितौं

आइ अंगना नीपै छी

दुआरि बहारै छी

सँउसे टोल बिस्कुट

चकलेटक हकार दै छी

आबिहए गै लुखिया

तोरो देबौ बिस्कुट

बैशाखमे दलानपर

23

आउर दालमोट

पिआ लय आइ तरुआ तरब

खमहरुआ अल्लू तिलकोर तरब

भौजी ननदिकेँ फाउन करब

हमरा लय नीक नीक साड़ी अनथिन

आउर पर्स सेण्डील अनथिन

पाँच दिन पहिने ई बात कहने रहथिन

जूड़शीतल

मिथिलाक पाबनि जूड़शीतल
भोरे धीयापुताक माँथ तीतल
ओम्हरसँ आबए
बड़का भैया
लोटामे भरने ठंढा पानि
माथपर दैत जाइए काइन
　　ओइ दिन बनबैए
　　बड़ी पूरी आउर सतुआ
　　पाकल बड़ी भीरीमे
　　जाइए कठुआ
भोरे सब स्नान ध्यान कऽ
गोसाँइ लग गुड़ आउर चढ़ाबैए
फेर बाइस पाबनि दिनसँ

बैशाखमे दलानपर

25

स्वर्गीय बाबा दादीकेँ

पानिक कलसा चढ़ाबैए

होली जेना सब जूड़शीतलमे

मीट-माँउस सब खाइए

ऐ पाबनिमे मुनिगा दाइलक

आउर आमक टिकुलाक बहुत महत्व अछि

अपन मिथिलामे ऐ चीजक

साबिकेसँ बहुत स्नेह अछि

आसकतिये गंगा दूर

भोरे उठैए दातमैन करैए

भांग पीबि भकुवाए रहैए

अपने एको बेर खेतक आइरोपर ने जाए

दिन भरि जनसँ टहल कराबए

हइद घड़ी आक धुतहर पीस खाए

खाली अइ दलानसँ ओइ दलान जाए

सदखनि छकरी तास खेलाए

ओही सबसँ, दिनभरि नहाइसँ नै फुरसति

बेमाए फाटल अछि

लेहू बहै अछि

एगो गोली खाएब से

बैशाखमे दलानपर

27

एकोरती फुरसति नै

बारीमे मुनिगा सोहरल अछि

दूटा तोड़ि खाएब से टेम नै

धीयापुता डेराइत रहैए

काजे डरे पड़ाइत रहैए

आसकतिक भरल बुढ़बा ई

कतौ जाइतो नै अछि कहबै की

कुछ कहबै तँ फनैक उठैए

मारि करै लाए सनैक उठैए

एक ठाम गेलौं बरियाती

भाइ रौ एकठाम गेलौं बरियाती

खा कऽ फूलि उठल हमर छाती

पहिने देलकौ पेप्सी कोला

पीब कऽ उठलौ पेटमे जौला

चटे देलकौ बिगजी नास्ता

ओइमे छेलौ बिस्कुट खस्ता

तुरते एलौ तैरपातक चाह

पीब कऽ मन कहलकौ बाह

झट दऽ अनलक पान सुपारी जर्दा

खा कऽ उड़ेलौं सब कियो गर्दा

पाँच मिनट बाद बैसेलकौ भोजन पट्टी

देख कऽ कुरियाए लगलौ कनपट्टी

आब हम कोन पेटमे खाएब

बैशाखमे दलानपर

29

तैयो बैसलौं भोजनपर

आकि अनलक अल्लू तरुआ आउर खमहाउर

संगे आएल तरका पूरी

पलेटमे बरहलाग कुरी

आकि अनलक माँछक मूड़ा

काँटक लगा देलिऐ बड़का कूरा

नजरि पड़ल रसगुल्ला दिस

खीच देलिऐ एक-डेढ़ सए पीस

पिट्ठैपर आएल दही-नून

सुरीक कऽ भेल पेट गुरुम

धाँइ-धाँइ हाथ-मुँह सब धोलौं

जेबीमे जनेउ सुपारी लेलौं

सहटि कऽ गाड़ी सीटपर बैसलौं

दिन भरि अन्न-पानि नै पीलौं

हजमोलाके गोटी खेलौं

बानरक माया पुँछपर

जहिना बानरक माया रहैए पुँछपर

तहिना माइयक माया रहैए

बेटी आउर पुतपर

  जन्मसँ रहैए संगे-संग

  बियाह-दान बाद रहैए सब तंगे-तंग

  सबटा पीलक एके माइयऽ दूध

  नमहर भेला बाद बिसरि गेल दुख

बेटी भेली अप्पन सासुर गेली

बेटा अपनामे मारा-मारी केलक

माइयक दूधमे घोरलक माँटि

अपनामे लेलक घर-घरारी बाँटि

अपन मइते जीअ लागल

तारी दारू पीअ लागल

बैशाखमे दलानपर

31

केकरो कियो नै कहैबाल

अनकरे गपे जीयैबाला

माइ-बाप सब देख रहल अछि

आँखिसँ ढप-ढप नोर बहै अछि

बुढ़बा बुढ़ियाक सामर्थ घटि गेल

बाजत की चुप्पे रहि गेल

पंचनामा

हँ तँ भैया आब तऽ अपना सब बुढ़ भेलौं
झगरा झंझट खूब केलौं
आब ने होइए मारि करी
अपनामे नै सब कियो लड़ी

धीयापुता सब नमहर भेल
पहिनुका जुग आब नै रहि गेल
सब कियो अपना-अपनापर भेल
कमाइ-खटाइ सब बाहर गेल

चल एक-दूटा पंचनामा बनाले
पाँच गोटाकेँ आइ बैसाले
घराड़ी सँ लऽ कऽ खेत तक

बैशाखमे दलानपर

33

बारीसँ लऽ कऽ डोरा तक

सबहक कागज अलग बनाले
जमीन सबहक रसीद कटाले
अमीन आनि कऽ नपा जोखाले
खेत आइरपर कतरा लगाले

जे धीयापुतामे काल्हि झंझट नै होउ
अपनामे सब मील कऽ रह
कोनो बात छौ तऽ अपनामे कह
माय-बापक बात सह

मारैके मन तऽ सागमे हरदी नै

गामघरमे देखल जाइए

इस्त्रगनपर अत्याचार बढ़ैए

काम-काजू जननी सब भेल

काज करैत देख थाकि गेल

दिन भरि घास-भुसा करैए

सासु ननदिक बात सुनैए

बच्चा सबहक नेरपन करैए

तहूपर से भानस करैए

अंगना घरक काज करैए

मरद-पुरुख सभ कोढ़िया भेल

साँझ-भोर पसीखाना गेल

एक दिन कमाइले नै जाइए

बैशाखमे दलानपर

35

पाँच दिन बैस कऽ खाइए

तहूपर से कानून बतियाइए

नून-तेल घरमे आनि कऽ नै दय

खाली नीक-निकुत खाए

ने कहियो पूब-पश्चिम जाए

ओ बेचारी फुट्टै कानए

लोक सब मिल कऽ तना मारए

मारैके मन घरवालीकेँ तऽ

कहैए सागमे किए ने हरदी देलही

ओ दिन बिसरि गेलही रौ

भाइ रौ की हालचाल छौ

ठीक-ठाक छौ ने

दलानपर आइ बड़ चहल-पहल छौ

देखै छियौ माहौल गरम छौउ

आइ कोइ कुटुम अबै छौ की

एह बाल्टीनक बाल्टीन शरबत घोराइ छौ

कागजी नेबोके गमक आबै छौ

भोर आइ आँखि लाल लगै छौ

मुँह सेहो भभकि रहल छौ

कनी टोलबैयोकेँ देखहिन

हमहूँ छीयौ दोसे-महीम

ओ दिन बिसरि गेलहिन

रौ संगे-संग कबडी खेलेलौं

बैशाखमे दलानपर

37

खत्ता उपछि गरचुन्नी मारलौं

पुआरमे पका कऽ ओकरा खाइ छेलौं

अखैन बनि गेलाए बबाजी

कहै छै आब नै किछ खाइ छी

सौंसे भरि दिन झूठ बजै छाँए

साधु भऽ कऽ ई की करै छाँए

ऊपरसँ छाँए साधो

तोरा मनमे लागल छौ कादो

एको बेर केकरो नै पुछै छाँए

तखन तोरा लय की साउन की भादो

जे कियो माँछ खाए मुरा-पुँछ समेत

से बैकुण्ठ जाय नाति-पुत समेत

चल जे केलाए से ठीक केलाए

तुलसी माला कँ धारण केलाए

जँ माला तोड़लाय तऽ

भगवान घरमे बारल जेमए

रुसनाहैर

यै गामवाली यै घुरि जाउ

अहिना होइ छै अपनामे

मारा-मारी झोंटा उजारी

नै गै बहीन हम नै रहबौ

आइ हम रेलमे कइटे मरबौ

एकरा घरमे एक रत्ती चैन नै

सब कहैए हमरा डाइन अइ

एक तऽ हमर माए-बाप अभगलाहा

जे घर बड़ भेल जरलाहा

पेने मुंगरीए हमरा मारैए

हम कोनो बैसल रहै छी

गै माए गै, रौ बाप

गतर-गतर कऽ हमरा फोड़लक

बैशाखमे दलानपर

39

घरसँ हमरा बाहर कऽ देलक

हम ओकर आब बौह छिऐ

जाबे नै भाएसँ पिटबेबै

ताबे नै हम चाइनसँ रहबै

नै तँ आइ कनैल पीस पी लेबै

हे कनियाँ अहाँ एना नै कानू

ई दुनियाँक रीत छिऐ से जानू

झगड़ा सबकेँ ओहिना होइ छै

एना कहूँ लोक जहर पिबै छै

चलू-चलू गामपर

छौड़ा कानैए बान्हपर

की कहू हम

बड़-कनियाँक झगड़ा

पंच भेला लबरा

घर ऊँच आ कान बुच

हेयउ ओकरा ओतऽ जाएब

हम कोन रस्ते जाएब

ई कोन गाम छिऐ

हुनकर नाम की छिऐ

किये कहबे केलक अछि

ओ बड़ धनीक अछि

दुआरिपर हाथी घोड़ा अछि

ऊँच-ऊँच धानऽ बोरा अछि

अहाँ हमरा पुछै छी तऽ सुनू कहै छी

तऽ बैसू अहाँ, हम आबै छी

यएह गामक नाम छी

अहाँ बैसले रहि जाएब, हम अबिते रहि जाएब

देखियौ ओकरा ओतऽ जे जाएब

बुझियौ कुकुरेसँ कटाएब
ओतऽ झबड़ी कुत्ता रहैए
भरि दिन झाँउ-झाँउ भुकैत रहैए
खाली नामे ओकर सुनबै
अंगनामे गुरो-खुद्दी नै देखबै
खाली नामेँ ऊँच आउर कान बुच
हम सब बाजब की रहै छी चुप
झगरा करै लय सन-सन करैए
ठाढ़ हएत से जी पड़ैए
ओकरासँ हम सब की लागब
अपने अछि गामसँ बारल
प्रतिष्ठा लय हम सब मरै छी
ओकरामे अहाँ की भीरै छी
जाउ जतैसँ आएल छी ओतै जाउ
अपने घर नून रोटी खाउ

सरलो भुन्ना तऽ रहुअक दुन्ना

आबक छौरा सब बड सुकुमार

भोरहरवामे ओकरा लागए गुमार

काजऽ नाम सुनि लागए बोखार

चोरी करै लए करय जोगार

भरि दिन जीन्स पहीर छौक घुमए

लेटा-लेटाकँ चीलम चुमए

अपने तऽ गेल मुदा पड़ोसियो लऽ कऽ गेल

देहपर दीनक बारह बजैए

फाइसनमे खाली चुर रहैए

बापक बियाहमे फटफटिया देलकै

बेच बिकीन कऽ ओकरो खेलकै

नासेहि काल बिनासेइ बुद्धि

चाउर सधलौ आब खाइए खुद्दी

पोखरि दिस ओहिना नै जाएत

मोटर साइकिलपर धाख जमाएत

    एकरे सभ सन गिरहत भेल

    खेतो बाड़ीसँ उबजा गेल

    आब ने ओहन मनुख देखाइए

    जे हर जोति कऽ खेती करैए

हमहूँ सब उबजाबै छेलिऐ

चारि-चारि कठाके तामै छेलिऐ

साठि सालक हमहूँ भेलौं

अखनो तक हम नै अकछेलौं

रौ सरलो घुन्ना तऽ रहुअक दुन्ना

हमरा जकाँ जखन हेमाँ तूँ

की जानी की करमाए तूँ

बाड़ीक पट्ठुआ तीत

जे कहबौ से तऽ करमाए नै
फिजूल पाइ करमाए खर्चा
कमाए तऽ पड़ै नै छौ
हम तऽ बाप छियौ कहबे करबौ
आब हम बुढ़ भेलौं
ई राज पाट तोहर छियौ
एखन तोहर सबहक जमाना छौ
हमहूँ सब पढ़ै छेलिऐ
एना नै लाट सहाएब बनलिऐ
गामपर सब काज-राज सम्हारि कऽ
बाबूके खेतक आइर-कोन बना कऽ
टेमपर स्कूल सेहो जाइ छेलिऐ
करै नै छेलिऐ एको रत्ती भूल

45

पाएरमे चप्पल नै पीठपर बैग नै

जाइ छेलिऐ कलमे-आइरे-धुरे पढ़ैले

हाथमे सबटा किताब कोपी पजीयओने

पानिमे भिजैत रौदमे तपैत

संघर्षमय शिक्षा पाबै छेलिऐ

नै छल होस्टल नै छल कोचिंग

पिपरऽ गाछ लग पढ़ै छेलिऐ

हमरा ओतेक तऽ पाइ नै अछि जे

नीक स्कूलमे पढ़ेबौ तोरा

हम सब कहाँ पढ़लिऐ पब्लिक स्कूलमे

तैयो धुरझार अंग्रेजी पढ़ै छिऐ

आइ-काल्हि एगो ई धंधा भऽ गेल

गाँव-गाँवमे प्राइवेट इस्कूल खुइल गेल

भुसकोलहो सब मास्टर बनि गेल

हम तऽ एतबे कहबौ जे गामेमे पढ़

मुदा तूँ कहमय जे मधुबनीमे पढ़

हम तऽ यएह कहबौ जे बाड़ीक पटुआ तीत

जतेकके बौउह नै ओतेकके लहठी

समधि एकटा भैंस लेबाक अछि

चलू लऽ अबै छी लोफा हाट सऽ

अहाँ तऽ बुझै-सुझै छिऐ

एकटा खुटापर मालोजाल रहनाइ

छै जरूरी

बाल बोध सब दुध लय रहैए बेल्ला भेल

गोबर करसी के हएत सुविधा

पाहुन पड़कलए दुध ताकऽ पड़ैए

गुरा-भुसा जे अनका दै छिऐ से अपने खाएत

ओहुना दुध अखुनका जमानामे

महगसँ आसमान छुने जाइए

कीन कऽ एतेक खाएब अहाँ तऽ भैंसक पैकार छी

बैशाखमे दलानपर

47

बहुत दिनसँ आइ-काइ करै छी
जे एकटा महीस लेब
बेटा-पुतौह बाहरे रहैए
गामपर असगर बैसल नीक नै लागैए
अहूमे तऽ लागल रहब
दूध बेच कऽ मरोमशालाक तऽ पाइ हएत
जरबै लय चिपरी-गोइठा तऽ हएत
अछाए समधि, महिसक खोराक तऽ बुझले अछि ने
एक टाल नार पुआर चाही ३ महिनामे
ढक कऽ ढक भुसा खाएत
आउर भोरे पोखरिमे नहाएत
ओकर गोबर गोत छुबऽ पड़त
दिन-राति मेहनति करऽ पड़त
आ महिसक दाम चालीस हजार अछि अखन
उहोमे चारि बियान महीस के
बाप रे बाप ओतेक मे हम नै सकब
छोड़ू नै लेब

जतेक के बौउह नै ओतेक के लहठी

मन लगले रहि गेल

मन छल एगो जमीन किनितौं
चारूकात जमीन घेरितौं
ओइमे एगो फ्लैट बान्हितौं

जीप मोटरकार किनितौं
नोकर-चाकर दरबान रखितौं
ओइमे स्वीमिंग पुल बनैतौं

सभदिन ओइमे स्नान करितौं
बड़का हम बिजनेस करितौं
हवाइ जहाजपर से चढ़ितौं

बैशाखमे दलानपर

बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं

मिथिलाक आगू नाम करितौं

हम मिथिलाक वासी छी

मरैतखीन रसगुल्ला खाएब

जवानसे बुढ़ भेलौं

बिगहा-बिगहा हम किनलौं

रती-रती कऽ हम जोड़लौं

जौ-खुद्दी खाके खेत किनलौं

मालदह कलकतिया आम रोपलौं

बाँसक बिटक ई तऽ नै अछि

पोखरि-झाँखड़ि ई तऽ नै अछि

सब पोखरिमे रौह नेन मारा अछि

दुरापर जोड़ा-बड़द टाएर अछि

धान-चाउरके कमीए नै अछि

तीनटा बेटा पुतौह भेल
अपनामे सब भीन भऽ गेल

नाति-पोता सब पढ़ै-लिखैए
के देखैए बुढ़बाकेँ
सुतल रहै छी, दबकल रहै छी
हम असगरे दलानमे

असगर खाइ छी दोसर बेर के पुछैए
रातिकेँ रहै छी अनहारमे
एकटा खाट आ एकटा सुजनी
राति भरि मच्छर खूब कटैए

एकरती डिबियामे तेल दैए
कुछ देर बरि कऽ ऊहो बुताइए
लालटेन लाय मन लगले यए
जूता लय मन तरसैए

बैशाखमे दलानपर

51

खोंखीसँ दम फुलैए
दवाइ के करबैए
गोदान कालमे बेटा पुछैए
बाबू की रसगुल्ला खाएब

प्राण जाइए छुटि
मुँहक बात मुँहे रहि गेल
जय मिथिला जय मिथिलेश
जय वैदेही जय मैथिल

माघक शीतलहरी

बाप रे बाप होइए प्राण चलि जाएत

मन नै होइए ओछैनसँ उठी

जवानक ई हाल तँ

बूढ़क की

भरि माघ पिअब सभ की

पाइनो बरफ भऽ गेल

दिन भरि धुइनसँ

आँखि नै सुजहाइए

ओछाइ-बिछाइ सभ गेल तीति

सन-सन-सन-सन

पछवा बहैए

केरा पातसँ बुन्नी खसैए

हाथ पएर सभ सुन्न भऽ गेल

बैशाखमे दलानपर

53

लोचना करए बाँझीक धधरा

सुटकल रहैए दलानमे बगरा

एक महिनासँ रौद नै भेल

आलू गाछ सभ गलि गेल

बाप रे बाप, होइए प्राण चलि जाएत

रसगुल्लाक जबार

नोत दै छी यौ नोत दै छी

रसगुल्ला जबारक नोत दै छी

हम आएल छी महरैल गामसँ

समुच्चा गामकेँ नोत दै छी

मुखिया जी यौ

लखन काका

आइ साँझुका हम नोत दै छी

पियोर छेनासँ बनल रसगुल्ला

काशी भाइ यौ नोत दै छी

पहिल तोरमे पहुँचब सभ गोटए

सबेरे सकाल कऽ नोत दै छी

पूरी तरकारी अओर देब

तखन

बैशाखमे दलानपर

55

तइपर सँ देब रसगुल्ला तोपि

नोत दै छी यौ

नोत दै छी

रसगुल्ला जबारक नोत दै छी

बसंत पंचमी

सरस्वती पूजा सभ साल जेना
हरेक सालमे आबैए
विद्यार्थी सभ हर्ष उमंगसँ
माता लग शीस झुकाबैए

माघ मासक शुक्ल पक्षमे
ई सुन्दर पाबैन आबैए
हरियर-हरियर तीसी-मौसरी
सरिसौ कऽ फूल फुलाइए

जोर-जोरसँ पछबा हबा
धऽ कऽ गर्दा उड़ाबैए

बैशाखमे दलानपर

57

देखियौ आम आ देखियौ महुवा

सभ मिल सुगन्ध सुंगहाबैए

गाछमे हरियर नवका पत्ता

रौदामे चमक देखाबैए

नहू-नहू बहए पुरबा हाबा

होलीक गीत सुनाबैए

धिया-पुता सभ बैठ आइरपर

गहुम गोइढ़लाक ओरहा पकाबैए

बसन्त पंचमी सभ लोककेँ

अपनामे मिलाबैए

कातिकक पूर्णिमा

जेबै देखैले मेला कमलाके

सभ सालमे मेला लागए जोर

नहाइले जाएब भोरे भोर

हेतै ओही बाउलपर कुस्ती

खाएब तोड़ि कऽ कुसियार

माए बहीन सभ खेलए

सामा चकेवा

भसबऽ जाए ओइ किनार

चुगलाकेँ चूड़ा दही खुआ कऽ

लेवान दिन चूड़ा कुटाए

उक्खड़िमे।

जोतलाहा खेतमे भसाबए

बैशाखमे दलानपर

59

सामा चकेवाकेँ

पूर्णिमा नहाइले जाइ कमलामे

मेला लागैए दुनू पारमे

नाच तमाशा हुअए अल्हा रूदल

बिकाए झिल्ली मुरही

मिथिलामे माए बहीनके

भाइयक मानल जाए ई पाबनि

सालमे एक बेर नाम लिअए

भाइक सभ बहीन

हमर भइया रहए जुड़ाएल।

गामक इनार

चलए मिलान सभ लोककेँ

भरै छलौं एक ठाम पानि

अपनामे रहै छलए बाजा भूकी

रहै छलौं सभ मिलि-जुलि कऽ

घर-घरमे आब भेल कल

लोको सभ भेल अल कल

खीचि ने पाबए इनारक रस्सी

ने रहल टोलमे एकता

के राखए पोखरि इनारक सेखता

साविकक देनके होइए अभास

कोनाकेँ बुझाएब पियास

विलुप्त भऽ रहल अछि इनार

कतऽ गेल घैलाक पानि

बैशाखमे दलानपर

ओही ठाम करै छलौं स्नान

रहै छल गामक शान

देवी-देवता रहै छल प्रसन्न

मन रहै छल शुद्ध

रखै छलौं शुद्ध-अशुद्धक मान।

अप्पन गाँव

अप्पन गाँव अछि साफ
लग-लगमे कलम गाछ
स्वच्छ हवाक सुगन्ध सुंगहाएत
बाट बटोहीक मन बहलाएत

हँटि-हँटि कऽ पोखरि इनार
स्नान करै छी ओइ किनार
महारपर सुन्दर पाखैर गाछ
कौआ मएना करए किलोल

भोरे देखै छी कौल्ह चलैए
रस-गुड़क सुगन्ध आबैए
हरियर-हरियर गहुमऽ खेत

बैशाखमे दलानपर

63

कालसँ बहैए कमला रेत

गाँवसँ बनल शहर बजार

खूब बनए पापड़ अचार

गामक छी ई रीति-रिवाज

सभक करए आदर सत्कार

बैशाखमे दलानपर

आउ यौ यार, खेलाइ छी तास

बैस कऽ अखन करब की

चलू करै छी टेम पास

बेर झुकतै तँ

जाएब करैले घास

चण्डाल सन रौद लगैए

चारि बाजऽ जा रहल अछि

लगैए अखन एक बाजल अछि

महींस खोलब ओइ बेरमे

पोखरि लऽ जाएब नहाबैले

सुतलोमे गरमसँ नीक नै लागए

खाटोमे उड़ीस करैए

कछर-मछरसँ नीन्द नै अबैए

बैशाखमे दलानपर

65

पुरबा हवा सेहो पेट फुलाबए

घामसँ देखू गंजी भीज गेल

कौआ डाढ़िपर लोल बबैए

मेना जामुनपर झगड़ा करैए

बगड़ा दलानपर ची-चू-ची-चू

गीत सुनाबए

एहन गरम नै देखलौं कहियो

रातिकेँ मच्छड़

दिनकेँ माँछी तंग करैए

आउ यौ यार खेलाइ छी तास

सेवा

मन होइए करितौं

बेटाक बियाह

पुतहु लेल हिक गरल अछि

काज करैत काल आब देह थाकि गेल

भानस करैक

शक्ति नै अछि

बेटी भेली, अप्पन सासुर गेली

असगर अंगनामे नीक नै लगैए

होइत पुतहु तँ

एक हाथ सेवा करितए

मुदा एगो बातक डर लगैए

पुतहुक चर्चा देख टोलमे

अही सेवासँ चित्त हराइए

बैशाखमे दलानपर

67

पढ़ल-लिखल कनियाँ सभ गेल

आदर सत्कार सभ बिसरि गेल

आठ बजेमे, सुति कऽ उठए

चुल्हा अंगना सभ, अहिना पड़ल-ए

के करए ससुर-भैंसुरक परदा

रीत-रेवाजक उड़ाबए गरदा

एकर देखसी करए, सभ कनियाँ

ई नै लागए ननदि, साउसकेँ बढ़ियाँ

ऐ पढ़ल लिखलसँ घास-छिलनी नीक

मन होइए करितौं बेटाक बिआह

पुतहु लेल हिक गरल अछि।

वर बिकाय लगनमे

वरक रेट नै पुछू यौ बाबू
मारा माँछक जेना दाम बढ़ैए
कनीको पढ़ल-लिखल रहल तँ
बेटाबला अप्पन मोँछ सीटैए
लड़कीबलाक खेत बिकाइए
देखू जमाना ताल ठोकैए
दुल्हाक डिमाण्ड अछि,
पाइ सन करी जमा
लिखल-पढ़लमे सभसँ तेज
पँचमामे पाँच बेर
अठमामे आठ बेर
दसमामे दस बेर लड़का फेल
एहनो लड़का लगनमे बिक गेल

बैशाखमे दलानपर

69

वरक रेट नै पुछू यौ बाबू

मारा माँछ जेना दाम बढ़ैए।

विहनि कथा खण्ड

अन्ध विश्वास

काकी गोर लगै छियनि, बैसथु।

-के, उड़ीसावाली कनियाँ।

-हँ काकी, निके रहै छथि।

-की ठीक रहब कनियाँ, तैयो ठीक छी। बुढ़-पुरान भेलौं, हमरा सभकेँ तँ ई पुरबा हवा जान लेबऽ लगैए। साँसे डाँर ठेहुन बातरससँ कनकनाइए। कोनो दवाइ नै काज करैए।

-आबथु, बैसथु। एक तँ कतेक दिन पर भेँट भेलथि यऽ।

-नै कनियाँ। आँगनमे बड़ड काज छै। आइँ यै कनियाँ, भुखनो बच्चा आएल अछि?

-हँ काकी, मरनीक बाबुओ एलखिन।

-कनियाँ बच्चा सभ सेहो एलनि।

-नै काकी। अखैन बच्चा सभक गरमीक परीक्षा चलै छै, तइ दुआरे ओकरा सभकेँ नै अनलिऐ। आब गर्मी छुट्टीमे सभ आम लिच्ची खाइ लए अबै छन्हि।

-आँइ यै कनियाँ, मरनी तँ आब बियाहैवाली भऽ गेल हएत।

-हँ काकी, ओकरेले कतौ लड़का ताकै गेल छथिन। काकी माथ केहेन लागै छनि। आबथु कनी तेल दऽ दै छियनि।

-नै कनियाँ। आइ जाए दिअ, आउर दोसरो दिन आएब।

-माथ फहराइ छनि तेल बिनु।

-से तँ ठीके कहै छी कनियाँ। हमर रुसना डिल्लीसँ हमरा लए एगो नवरतन तेल ठंढा बला, पाँचटा साबुन नहाइ बला, दू किलो सर्फ पठा देलक, जे माय लगा आ जे किछु घटतौ तँ फोन करिहिएँ। ने, अखैन कनियाँ रवि रायकेँ समय छै, भूसा गर्दा सभ माथमे भरि जाइत छै। बड़ड गपशप केलौं कनियाँ, आब कनी जाए दिअ कनियाँ।

-ठीक छै काकी जाथु। हमहूँ भानस करऽ जाइ छी काकी। काकी हिनका भनसा भऽ गेलनि।

-नै कनियाँ। हमहूँ जाइ छी। कनीक पछुआरमे सँ भोरे अरिकौंछ तोड़लिऐ, तकरे चक्का बना कऽ झोरेबै, कनीक आमिल दऽ कऽ। तेहन हमर पुतोहु भेल कनियाँ जे अखैन तक दालि तरकारी नून, से नून-जाउर बना दैए, कहियो अनूने। कहियो अन तीमन नीक नै बनबैए। कनियाँ अहाँकेँ नीक लगैए अरिकौंछ।

-हँ काकी, हमरा सबकेँ ई कतऽ पाबी।

-ठीक छै तऽ हम अपना छोटा नातिन दिया पठा देब बाटीमे। जाइ छी कनियाँ।

… … … … … … … … … … … ..

-बड़की दीदी, बड़ड गप्प सरक्का चलै छलै रुसना माएसँ। की बात छै, अहूँकेँ गुण जादू सिखबाक अछि की?

-नै छोटकी। तोरा सभकेँ यएह पपियाहा मन सभ दिन मन खराप राखै छौ।

-नै यै दीदी। एको महिना नै भेलै, सुगौनावालीकेँ देहपर पाँचटा देवी पठौने छलै। कतेक ओझा गुणी एलै, तखन जा कऽ कनीक अन्न-पानि खाए लगलैए। सभ कहै छै हकल डाइन छै। छोटका बेटाकेँ मारि कऽ सिखलकैए।

-छोड़ ई सभ बात। तूँ सभ गामघरमे रहि कऽ अहिना सबकेँ डाइन आउर जोगिन कहै छिहिन। ई सभ अन्धविश्वास छिऐ। समाजमे ईएह सभ बातसँ झगड़ा होइत रहैए आउर एक दोसरकेँ डाइन कहैए।

साउस पुतोहु

-कनियाँ, घरमे छी यै?

-की भेलनि माए?

-आँइ यै छौँकावाली, एतेक निचेनसँ सुतै किए छी यै? दुपहरक काज-राज अहिना पड़ल छै। कनी महिसोकेँ पानि देखा ने दियौ, पियासल महीस खुट्टा तोड़ि रहल छै। एतेक कहूँ मनुख सुतए। कतेक नीन आबैए अहाँकेँ यै।

-तँ की करू, सुतबो नै करू। भरि दिन खटैत-खटैत हाथ-पएर कारी-झामर भऽ गेल। ओम्हर चिलका तंग करए, इम्हर भानससँ तंग। हिनका होइ छै, हम भरि दिन खटैते रही, हमरासँ नै हएत महीसकेँ पानि पिआए। हमर माथ बड़ जोर दुखाइए, डाँर-पिट्ठी सेहो तोड़ने जाइए। एखन हमरासँ किछु नै हएत कएल।

-आँइ यै, एतेक कहूँ पुतोहु बानसब्बर हुअए। सुनियौ यै ढुकरीक माए। अहाँ सभ कहबै जे साउसक दोख। हम की बैसल छी। भरि दिन गोरहा पाथैत-पाथैत दुपहर भऽ गेल, एक टाएर गोबर छल हन। एखन तक पूजो नै केलौं। कखैन खाएब कोनो ठीक नै। ऐ महरानीकेँ देखियौ जे हमरेपर हाथ-पएर चमकाबैए। बड़का छोटका कऽ आइयक कनियाँ कोनो माने-मतलबे नै राखैए। अपन जएह मोन भेल वएह केलक। के खेनहारकेँ देखैए, जे ससुर भैंसुर खेलक कि नै, अपन

पेट भरि गेल, दोसर आब जेना रहए। अपन भूख तँ चुल्हा फूक, दोसरक भूख तँ माथा दुख। भगवान हमरे बेटाक कपाड़मे ई नसिनियाँ बथाए छल। जाइ छी नहाइ लए, एकरासँ मुँह लगाएब तँ अपने मुँह खराब हएत। मुदा एकरा जाबे तक बेटासँ पिटबाएब नै ताबे तक हमहूँ सुख-चैनसँ नै रहब। हमहूँ ऐ कनसिनियाँकेँ देखा कऽ रहब, जँ बेटा वशमे रहत तँ ऐ जनानीकेँ केहन होइ छै। साउससँ जवाब-सवाल केनाइ सभ हम देखा देबै। महीस जेना नाथि देबै।

पुतोहु- देखियौ यै मकरा काकी। हम सभ सुनि रहल छी। साउस कहूँ पुतोहुपर एतेक आगि-बाउल ढारै अइ यै। खिखरी माए, हमर साउस पहिने पुतोहु नै छलै की, जे पुतोहुकेँ एना सताबै छै। जँ ई बुढ़िया बेटासँ हमरा मारि खिया देलकै तँ घरमे यएह रहत कि हमहीं रहब। झोँटा-केस हम नै उखाड़ि लेलिऐ तँ फेर की।

साउस- यै, सुनियौ यै टोल-पड़ोसक लोक सभ। ऐ भत खोखरीकेँ हम कोन आगि-बाउल ढारि देलिऐ जे ई हमर झोटा-केस उखारत। कोनो हमरा कियो देखनाहर नै अए। आइ आबऽ दही बुढ़बाकेँ, नै किछु कहलकौ तँ फेर की।

पुतोहु-हाँ-हाँ, देखब ने अहाँ हमर की बिगाड़ि लेब। जँ बेसी ओम्हर-आम्हर करब तँ हम छोटका भाएकेँ फोन कऽ के नैहरे चलि जाएब। तखन अहाँ अहिना असगरे चुल्हा फुकैत रहब। कहिया मरतै ई बुढ़िया, हमरा जानपर अछि।

सगुन

ठकोकाका- हर्षित बाबू। एना माथपर हाथ धेलासँ काज-राज चलैबला नै अछि। किएक तँ अपन मिथिलामे भऽ एलैए जे परम्परा, तेकरा तँ निभाबैए पड़त। किएक तँ अखुनका जइ मनसूबे चलि रहल अछि, तेकरा संग हमरा लोकनिकेँ चलऽ पड़त ने। अच्छा, खएर बात अपन समाजमे गरीब होइए वा धनिक, मुदा बेटी विवाह कोनो धरानीए भइए जाइत अछि। तइ लेल घबड़ेबाक कोनो बात नै। सभ बाबा उगना ठीक कऽ देथिन। ठीक छै तँ जाइ छी हर्षित बाबू, ठीक छै।

हर्षित बाबू- आ ठको काका। हाँ कहू, की कहै छी। देखियौ जे चढ़ैत शुद्धमे बेटीक कन्यादान कऽ के हम सभ दिल्ली जल्दी जाए चाहै छी। तइ दुआरे काका हम अहाँकेँ सलाह लिअ लए आएल छी। जल्दीसँ कतौ भाँज लगेबै।

ठकोकाका- हर्षित बाबू। ओना हम सखबारमे एगो लड़का देखने छलिऐ, हमरा बड पसन्द आएल। लड़का बंगलोरमे इन्जीनियरिंगक तैयारी करैत अछि। बुझबामे आएल, लड़का नीक गोत्रसँ संलग्न अछि। भाव-विचार बड मधुर आ स्वभाविक सेहो छै। मुदा हर्षित बाबू, लड़का कऽ माय-बाप नै अछि, ओकरा मामा-मामी आ नाना-नानी पालने अछि।

हर्षित बाबू- ठकोकाका, जँ अहाँ ओ भाँज लगबितौँ तखन तँ बुझ्झु जे सभ ठीके-ठाक रहितै।

ठकोकाका- ओ लड़का बुझ्झु जे अहाँकेँ सेट भऽ गेल। सगुन ठीक अछि अहाँक यौ हर्षित बाबू।

हर्षित बाबू- शुभ लगनमे देरी की। जे नगद लेता अओर लड़का जे लेतहिन, हम सभ देबनि दै लेल। चैनकेँ गलामे देबनि, मोटर साइकिल देबनि। मुदा ओ लड़का हमरा बड पसन्द आएल। ठकोकका, अहाँ जल्दीसँ ई चक्कर चलाउ। हमर कन्यादान भऽ जाए। जल्दीसँ सगुन लऽ कऽ जाउ, गोर लगै छी।

लघुकथा खण्ड

ओगरबाह

बड़ दिन भऽ गेल भात खेला।

मरुआ रोटी खाइके आब मन नै होइए। रोटी चिबाबैमे आब सकै नै छी। दालिमे जँ लोंगिया मेरचाइ नै दैत अछि तँ दालि रोटी खाइमे स्वादे नै अबैत अछि आ बेशी मरचाइयो खेलासँ पेटमे सुलवाइ सेहो हेमऽ लगैए।

पुतोहु देख कऽ खौंझाइए जे बिना मरचाइके बुढ़बाकेँ एकोरती रोटी ससरै नइए, अखन देखियौ जे सँउसे नुए-वस्त्रे घिनओने अछि।

ई सभ सुनि आउर देख कऽ हमरो नीक नै लागैए, लोक देख कऽ सेहो दुर छीया करैए, कहिया एतै अगहन मास जे खूब खइतौं खेसारी साग, भात आउर अल्लूक चटनी।

मन थाकि गेल गामपर बैसल-बैसल, जवान तँ छी नै जे जाएब पंजाब-दिल्ली खटै लए। आब गामेमे रहि कऽ मालिक गिरहस्त सबहक खेत ओगैर कऽ अप्पन बाल बच्चाक गुजर करै छी। धानऽ मासमे धान

ओगरलौं, गहूमऽ मासमे गहूमकँ, रवी महीनामे रवीकँ ओगरलौं, ओहीसँ अप्पन जीवन बितैए।

… … … … … … … … …

बड़का गिरहस्त सबहक खेतक देखभाल केनाइ। अखार मासमे जखन अप्पन रोपनी खतम कऽ लैत छल, तखन खेतक देख भाल केनाइ ओगरबाहक काज रहै छल।

सब गिरहस्त अप्पन गामपर आबि कऽ नथुनी मरड़कँ कहि दै छल जे कनीक हमरो खेतक देखभाल करिहऽ, जे हेतऽ ओगरबाही से हम खेतेमे एगो कोन बारि कऽ दऽ देबऽ, तऽ ओगरबाह अप्पन देख-रेख करै छल, खेतमे आइरसँ पानि निकालनाइ, साँढ़-पारासँ बचेनाइ। ई सबटा काज ओगरबाह करै छल। धानक कटनी होइ समएमे सब गिरहस्त ओइ ओगरबाहकँ साल भरिक बोइन दऽ दै छल।

उहो अपन ऊँचगर जगह देखि कऽ एगो खोपड़ी बनाबैत छल, आउर ओही खोपड़ीमे रहि कऽ अपन धानक देख-रेख करै छल, आउर धानो खूब उपजबै छल। भदै, जसबा, मलीदा, जेकर भात अंगनामे बनितए तऽ दलानपर ओकर गमक जाइ छल।

मुदा आब ने ओ धान रहल आने उबजा रहल। सगरौ देखै छी जे उबजाउ माँटि काटि कऽ सड़क हाइवे तैयार होइए, अइ शहरसँ ओइ दिस लेल रस्ता बनैए, कतेक उबजै छेलै कुसियार कमला कातक माँटिमे, तऽ उबजा सब दिनेसँ अछि, चाहे उ धान हुअए या गहूम या कुसियार मुदा चापी जगहमे तऽ पानि सब दिन भरले रहैए, खाली ओइमे सोउरखी, भेंट, मिरचाइ, केसाउर उबजैए, दिन प्रतिदिन लोक सब भेल जा रहल अछि सुकमार, सगरो देखै छी जे खेनहार भऽ गेल बेसी आ उबजेनहार भऽ गेल कम।

खाइ लाए चाही अमीर जकाँ, से गरीब घरमे पतरके चाउर भात आउर खेतमे जखन कहबै धीयापुताकेँ जे एक छअ कोदारि पारऽ तऽ कहत हमरासँ नै हेतऽ, अप्पन जनसँ कराबऽ, हमरा हाथमे फोंका भऽ जाएत, देहमे एकोटा बच्चा माटि नै लगाबऽ चाहैए, कहबै जे बौआ कनीक बाबाक खेतमे चौकी दऽ आबहक तँ कहत हमरासँ नै हएत, हम तऽ काउलेज जाइ छी, बड़का मजीस्टेट बनऽ।

पढ़ाइ तऽ जरूरीए छै, मुदा संग-संग खेनाइयो ने छै, भुखले तऽ पढ़ाइयो नै भऽ सकैए। पढ़ि लिख कऽ जखन हम रुपैय्या कमेबै आउर ओइ रुपैय्याकेँ हम खा लेबै से तऽ नै हएत, ओइ टाकासँ हम धान-गहूम, मर-मसल्ला, तेल-नून लेबै। तखने ने हम ओइ पाइक कोनो काज बुझबै, जे ओइ पाइ कऽ कोनो काज नै हेतै तऽ बैंकेमे रखलासँ कोन फाइदा। ई पाइये तऽ लोक नै खाइ छै। जखन ई अन्ने नै उबजतै तखन हमरा लोकक पढ़ै कऽ की फाइदा।

हवा आउर पानि पी कऽ तऽ नै हएत जीअल, ओही दुआरे पढ़ि-लिख कऽ गिरहस्त इन्जीनियर बनबाक चाही जे किसान सबकेँ सलाह भेटतै, जे नै बुझै छै तेकरा सबकेँ खेती-बाड़ीक बारेमे सिखाएल जेतै, बुझाएल जेतै। ओना अपना मने गिरहस्त सब अलए-पलए खाद छीट कऽ अपने खेतक उर्वरक शक्ति घटा लै अछि।

ओइसँ ओ फसल नाश होइते अछि आउर दोसरोक फसलपर असर पड़ैत अछि, ओहीसँ उबजा नै होइत अछि।

गिरहस्त सब तबाह रहैत अइ, जे अहू साल उबजा नै भेल। अहू बेर रौदी भऽ गेल।

ओही संग बजार-मार्केटपर अनाजक सेहो असर पड़ल, महगाइ बढ़ल जेकर दाम ५० रुपैय्या तेकर दाम ९० रुपैय्या भऽ गेल, लोक जिअत

कोना, दिन-प्रतिदिन महगाइ आसमान छुने जाइए, दिनोदिन जनसंख्या बढ़ले जाइए, काज करऽ आब कियो चाहैए नै, यएह सभ चाहैत अछि जे अल्हुआ उपरेमे फड़ैत अछि। पहिने लोक हर-बड़दसँ खेत जोइत कऽ छोड़ि दै छेलै मुदा अखनी देखियौ जे एकेबेरे धान आउर खेरही खेतमे बुइन दैत अछि, खरे पतारमे, ने कियो खर बिछलक, आने कियो ढेपा फोड़लक खेतमे, माँटि तरखायए नहिये, आउर गीलगरे खेतमे जजाइत छीट दैत अछि, तखन कहत जे अहू बेर दालि नै भेल, आब देखियौ जे सबहक दरबज्जापर सँ धीरे-धीरे टाएर बड़द हर-फार सभ उजरि रहल अछि। सब एटोमेटिकक दुनियाँमे आबि गेल। ट्रेक्टरसँ देखियौ जे उपरे-ऊपर जोति दैए, खेतमे माँटि नै होइए, आउर ओइ लागल अन्न नै उबजैए।

पहिने लोक सब हर-बड़द राखि कऽ सब सुविधा प्राप्त करै छल मुदा अखैन देखियौ जे सब गिरहस्त डेराइत रहैए, जे अइ बेर अन्न उबजत कि नै उबजत, किएक तँ गोइठा गोबर होइत छेलए, तऽ ओइसँ जरनाकेँ सेहो काज पड़ि जाइ छल, खेनाइयो बनि जाइ छल, खेनाइयक सेहो स्वाद कुछ अलगे रहै छल। आउर ओ छाउर लऽ के खेतमे फेकलासँ कम्पोस्ट खादक काज करै छल, मुदा अखन देखियौ जे घरे-घर गैस चुल्हा भऽ गेल, प्रेसर कुकर भऽ गेल, जइसँ तुरन्त खेनाइ बनि जाइत अछि, कोनो नै धुआँ-धुकुरक झंझट, कियो बुझलक, कियो नै बुझलक जे खेनाइ बनलै कि नै, जतेक नीक छै ई गैस चुल्हा, ततबए खराबो छै जँ प्रेसर कुकर ब्रास्ट भेल तऽ बुजहू जे घर संगे उड़ि जाइए लोक, बाँचइ के कोनो उपाए नै। मुदा आइ कालि लोक भऽ गेल अलकल, एकटा सलाइ नै बारऽ चाहैए।

ओकरो लेल आब लाइटर चाही, गैस पजारैमे सुविधा हएत।

आब के पिसैए लोरही-सिलौटपर मसल्ला, सब आब मिक्सीमे पिसैत अछि। गाम-गाममे भऽ गेल आब बिजलीक कुटैया, आब ढेकीमे धान, के खाइए ललका चाउरक भात, कहत जे एहेन फाटल-फाटल चाउर हमरा मुँहमे गरैए।

के खाएत आब सीम दाइ, आ बड़ी।

के भरैए आब घैलामे पानि। सबहक दुआरिपर आब चापाकल भऽ गेल, जखन चाही तुरन्त ताजा भरि कऽ कहत पिअब।

सगरो देखल जाइए, तऽ ई सब चीज आब उठाइन भेल जाइए।

पहिने लेवानमे देखै छेलौं जे दाय काकी माए सब अदहा राइतीए अंगनामे उखैर-समाँठसँ चूड़ा कुटि रहल अछि।

काकी चुल्हापर खापड़िमे लारनिसँ धान भूजि रहल अछि, होइत भिनसर चूड़ा तैयार भऽ जाइ छेलए।

मुदा अखुनका इस्त्रगन सबकेँ देखल जाए तऽ ओइ सब बेबहारमे सबसँ पाछू अछि, दिनोदिन सब चीज सब छुटल जाइत अछि। आलसमे लोक बेमुक्त भेल जा रहल अछि, जे उबजै छै ओ खेत आने लोक करैए, साँढ़-पारा खाइए खेतमे धान।

एक खेतक ओगरबाह, ओ भगा कऽ दैए ओकरा खेतमे, तऽ दोसर खेतक ओगरबाह ओ भगा कऽ दैए ओकरा खेतमे, सब अपना-अपनाकेँ बचाबैए, दोसरकेँ खुआबैए।

… … … … … … … ….

बड़ दिन भऽ गेल भात खेला।

मरुआ रोटी खाइके आब मन नै होइए। रोटी चिबाबैमे आब सकै नै छी। दालिमे जँ लौंगिया मेरचाइ नै दैत अछि तँ दालि रोटी खाइमे स्वादे नै अबैत अछि आ बेशी मरचाइयो खेलासँ पेटमे सुलवाइ सेहो हेमऽ लगैए।

पसीखाना

-भूखन, हौउ भूखन, अंगनामे छअ हौउ, कनी बाहर आबऽ। हम छी ट्रेक्टरबला, मेंहथसँ ऐल छी, कनीक लेबरक काज छेलए, चारि-पाँचटा *माँटिकटी*बला। भिनसरक आठ बाजि गेलै। सुतले छअ हौउ, कनी बान्हपर आबऽ।

तखन एकटा छोटका बच्चा, गांइरखुल्ले छौँउरा, टिनही बाटीमे बसिया भात आउर मुरै साग खाइत अंगनासँ बाहर भेल कहैए- हमर बाबू सुतले छै। रातिमे माएसँ झगड़ा भऽ गेलै, भुखले सुति रहलै, अखैन तक नै उठलै।

-आँइ रौ बौआ, तऽ माए कतऽ छौ?

-माए गेलै गिरहत खेतमे धान काटै लाए।

-ठीक छौ, तऽ जाइ छियौ हम, उठतौ बाबू तऽ कइईहैन जे ट्रेक्टरबला ऐल छलऽ।

कुछे छनक बाद भुखना अंगैठी मोर करैत उठैए, आउर कहैए- कतऽ गेलाए गै गोपलखावाली, जल्दीसे हमर रौतुका माँछ भात ला।

भकुवाएले भुखना घरसँ बाहर आएल, आँखि मीरते देखैए अंगनामे केकरो नै तऽ बैसि जाइए, ओसारिपर कनीक भक टुटलै तऽ अपन छोटका बेटाकेँ पुछैए- करिया छाँए रौउ, करीया।

छोटका छौरा बकरी चरबैत रहैए। कनीक घरसँ हटिकऽ खेतमे ऊ अवाज दैए- की भेल्लऽऽऽऽ बाबू।

तऽ कहैए- आँइ रौउ, देखही तऽ रौतुका माँछ घरमे छौ कि नै?

ओकर बेटा कहैए- आँइ हौ, रातिमे तऽ माए साग-भात केने छेलै, माछ-भात कहाँ बनेलकै। तोरासँ माए दसटा रुपैय्या मांगलकऽ तऽ माएकेँ तूँ झोंटा पकड़ि कऽ अंगनामे नै मारलहक, जे हमरा लगमे एकटा अछि नहिये आउर हिनका दियैन हम तेल लय पाइ। तऽ माँछ-भात कहाँ बनलै, मुरै साग आउर भात बनल छेलै। लागैए तूँ सपनाइत उठलऽ हन, जेहो बचल छेलै भात सेहो हम दुनू भाँइ खा लेलिऐ, आब नै छै हण्डीमे।

भुखनाकेँ भुखे प्राण जाइ छल, तऽ केलक की, ओसारापरसँ सीमेण्टबला छोटका बोरामे अदहा बोरा उसना धान उठेलक आउर चलि गेल। दोकानमे ओकरा बेचिकऽ करीब तीस रुपैय्या भेल, ओइ पाइसँ भुखना अढ़ाइ रुपैय्यामे एमप्रो बिस्कुट लेलक आउर चारि आनाक सलाइ आउर एक बण्डल बीड़ी लेलक, आउर एगो छलिया सुपारी ओकरा दोकानेपर फोड़ि लेलक सरोतासँ, आउर कुर्ताक जेबीमे राखि लेलक। बिस्कुट खा कऽ पानि कलपर पी लेलक आउर एक टूक सुपारी मुँहमे लऽ कऽ गुलठियाए एगो बीड़ी धरा कऽ अप्पन पी रहल अए। करीब दू के समए भऽ रहल छेलाए, ओमहरसँ चारिटा आउर पियाक आबि रहल छेलाए, उ

सब भुखनाके संगीराए छेलाए। ओकरा सबकेँ भुखना देख के कहैए- की रौ दोस, कतऽ जाइ छाँए?

-चल ने मुड बनाके आबै छी कोठियासे। दुवे सेरके देबै आउर सब गोटाए पान खाएब। साँझमे घुमैत-फिरैत चलि आएब। अतऽ असगरे बैसके की करमाए।

-ठीक छै दोस। चल हमहूँ संगीए ताकैत छेलाउ, जे कियो भेटत तऽ जाएब, तारी पिअ, मुदा कियो भेटते नै छेलाए, चल।

एमहर भुखनाक कनियाँ धान देखके सौँसे टोलमे लोकसँ पूछि कऽ गारि पढ़ि रहल अछि जे हमर ओसारपर सँ धान के लऽ गेल? धान कुटबै लाए रखने छेलौं। धीयापुतासँ पुछलौं तऽ ऊहो सब कहलक जे हम नै देखलियौ केकरो चोरबैत।

ओही कालमे कियो पूछि दैए जे आँइ यै गोपलखावाली, घरबला कतऽ गेल यै, चारि-पाँच दिनसँ नै देखै छी।

-कतऽ जेतै यइ बहीन। गेल हेतै कोनो पसीखाना तारी पिअ। नै कतौ देखबै तऽ ओतै भेटत साँझ-विहान, उठोउना लागल छै। देखियौ ने, डाक्टर कहने छै जे लीभर कमजोर छै आ तैयो नै ई बजरखसुवा तारी छोड़ै छै। साँझो खन अही पिऐ खातिर बजलिऐ तऽ झोंटा पकड़ि कऽ मारलक, राइतो नै खेलक। हमरा लगमे पाइ अछि जे एकरा दवाइ करा देबै? असगर धान काटै छी, धीया-पुताकेँ पालै छी, दुटा बकड़ी पोसने छी, ओकरेसँ छअ महीनामे पाँच सौ हजार टाका भऽ जाइए, मुदा ई सरधुवा तऽ एकोटा रुपैय्या हमरा हाथमे नै दैए, आउर रातिकेँ खाइ लए मांगत नीके निकुत, खाली तरले भुजले, हम कतऽ सँ पुराएब। आइयो आएल छेलै मेंहथसँ टेकटरबला, कहै लए जे काज करऽ चलऽ मुदा ई जुवन पिठा खाली पी के ओंघराएल अछि अंगनामे।

कहियो यै दीदी रुख-सुख नै खाएत, सबदिन खाली चाही पीयै लए। एकटा रेडियो छेलै, सेहो बेचि कऽ पी गेल। सौंसे पियाक देखलौं मगर एहेन पियाक हम नै देखलौं जे घर परिवार के कोनो धियान फिकिर नै। एतेक लोक पैंजाब गेलै, एकरा कहै छिऐ तऽ कहैए हम एतै कमाएब आउर एतै खाएब। लोक कमा-कमा की नै केलक मुदा एकरा देखियौ जे खाली मौगी कमाइ खाइए आ भने दिन जाइए। एकटा घर नै तेकर कोनो ध्यान-फिकिर नै, खाली दिनभरि दौड़ मियाँ महजीदपर। बैसल-बैसल किछु नै फुराएल तऽ खाली पिनाइ आउर सुतनाइ। सुतल-सुतल सुस्ती पकड़ि लेलकै। घरमे एकोरत्ती मटिया तेल नै छै, हम लोकक अंगनासँ पैंच आनिकऽ डिबिया बाड़ै छी। तेल आनब से पाइ नै यए, आउर एकरा खाली चाही पाइ पियै लए, धियापुता पढ़त से हमरा एकटा रुपैय्या नै अछि जे मास्टरकेँ देबै। हम तऽ तंग आबि गेल छी। मन नै होइए एकरा घरमे रही, भागि जाइ हम बाल-बचा लऽ के नैहर। जरलाहाके जहियासँ ऐ भिखमंगाके घरमे एलौं, कहियो सुखसँ नै खाइ-पिबै छी। कि कहियो नीक कपड़ा पहिरतौं, जे नैहरामे बियाहमे देलक साड़ी माय-बाप वएह साड़ी साया ब्लाउजसँ गुजर करै छी। माए एगो पहुँची देने छेलाए, सेहो कमहरसँ नै भिखमंगा झंझारपुरमे चाटि लेलक। हमरा फुसियेँ कहलक जे दोसर रङके बनाके आनि दै छियौ। की कहू यौ गौंआ-घरुवा, ई सब देखके तरीवा हमरा गाँव नै जाइए लाजे जे एकर भाए-बाप की कहत। हमर बापकेँ एतेक मन खराब छेलाए से तऽ एतेक कहैत रहि गेलिऐ मुदा खाली कहए, साँझमे जाइ छी, पाइ लऽ लिअए आउर घुरि कऽ आबि जाए जे अनहार भऽ गेलै, ओही दुवारे नै गेलिऐ। कालि चलि जेबै।

विचार-बिन्दु खण्ड

राजा अओर परजा

एगो समए छेलै जहिया लोक लोकपर विश्वास करै छल, अपन समाजमे कोनो तरहक बातचीत होइत छल तँ गाममे जे राजा रहै छल तिनका ऐठाम सभ निपटारा भऽ जाइ छल, अओर ओही ठाम न्याय अओर अन्यायक फैसला होइ छल, किएक तँ सभ लोक राजाकेँ सम्मान अओर आदर-सदाचारसँ नाम लैत छल, किएक तँ राज्यमे कोनो तरहक सुखार या आपदा-बिपत्ति होइत छल तँ राजा परजाक संग दैत छल, ओइ परजाक मदत-सहायता करैत छल मुदा अखन एहन समए आबि गेल जे राजा अओर परजामे कोनो अंतरे नै रहि गेल, किएक तँ आब ने ओते अन्न उपजै छै आ ने राजा परजाक मदति सहायता करै अछि।

पहिने लोक सभ राजासँ अप्पन बेटीक बियाहक बातचीत लऽ कऽ जखन राजदरबारमे जाइ छल तखन ओही व्यक्तिकेँ महराज आश्वासन दैत छल जे तूँ या तोहर बेटीक खर्चाक व्यवस्था भऽ जेतऽ तखन परजो अप्पन राजामे लीन रहै छल। मुदा ने ओ सस्ता जमाना रहलै अओर ने ओ राजा रहलै, किएक तँ पहिनुकहा लोक सबहक कहब

छेलै जे ओ लोक सभ जे छेलै, एगो लोहाबला व्यक्ति मानल जाइ छेलै, ओ सभ जे बाजै छेलै से करै छेलै, अप्पन नाम हँसाए नै दै छेलै, कोइ दोसर गामबला यदि नाम सुनै तँ कहै जे फलाँ गामक राजा अप्पन परजाक सुख-दुख देखै छै, कतेक नीक छै ओ गाम, चल ओही गाममे घर बनाएब , ओही राजाक राज्यमे रहब।

देखही जे दुआरिपर कतेक-कतेकटा ढक छै, कतेक अन्न छै, कएगो हाथी बान्हल छै, कतेकटा हुनकर दरबज्जा छै, चल ओही राजमे रहब, कोनो चीजक दिक्कत नै हएत। सभ प्राणी ओही ठाम जीवन बिताएब।

ई सभ परजा राजाक नव परजा बनैत छल।

आब तँ देखल जाए तँ राजा परजाकेँ सुपै बोइले नै दइ पर तैयार होइत अछि। पहिने एक सेर मरुआ नै तँ एक सेर जऽ दैत छल। भरि दिन हर जोइत कऽ आबै छल तँ ओ मालिक अप्पन जऽनकेँ मरुआ अओर जऽ बोइन दैत छेलै।

मुदा देखैत महगाइ कऽ चलैत राजाक मनमे अविकार आबि गेल जे एतेक अन्न जे ओकरा देबै से ओही अन्न बेच कऽ हमरा अओर दु कट्ठा खेत भऽ जाएत अओर अपन बढ़ैत परिवार देख कऽ सोचऽ लागल जे ई संसार अहिना रहत मुदा अप्पन सान-गुमान सभ राजा बिसरि गेल, के देखैए परजाकेँ अओर के देखैए अप्पन सान सौकत।

बदलैत दुनियाँ देख परजा सभ गामसँ शहरमे काज करैक लेल प्रस्थान केलक जे आब गाममे राजा अप्पन घर-परिवारकेँ देखत आकि हमरा सभक मदति करता।

सभ परजा अपन गाम छोड़ि शहरमे कमाए लागल, अओर जे राजाक हरोड़ीमे काज करैत छल से ओ जमीन जजाति सभ राजासँ लिखबा कऽ परजा अपन नाम कऽ लेलक।

आब ने राजा ओइठाम कियो परजा हरोऊरी खटैत अछि। किएक तँ दोकानमे एक टका सलाइ दै छै आ राजा ओइठाम भरि दिन धान-दाउन करलापर पाँच किलो धान बोइन दै छै, से नै तँ आब गाम छोड़ि शहरेमे काज करब, बड़ बढ़ियाँ मन भेल तँ काज केलक, नै भेल तँ अप्पन चारि दिन बैठल छी, दोसर किछु करै अछि, ई सभ सोचि राजा अओर परजामे कोनो महत्व कनीक-कनीक सभ हटल जाइत अछि, लोकक मनमे आलस्यक प्रवेश भऽ गेल, केकरो नै केकरो से मतलब रहि गेल।

मिथिलांचलक राजा छल राजा जनक जे अप्पन राज्यमे खेतसँ खलिहान तक परजाकेँ कखनो दुखी नै देख सकै छल। जे कोनो मनमे कल्पना करैत छल परजा तँ ओकरा सबहक राजा जनक पूरा करैत छल, केकरो कोनो तरहक असुविधा नै होइ, तेकर लेल तत्पर रहै छल।

एक बेर राज्यमे भीषण सुखार भऽ गेल जे दू की पाँच साल तक बर्खा नै भेल, धरती फाटि-फाटि गेल तँ महराज जनक यज्ञ कऽ कए अपन परजाक हितक लेल भगवान इन्द्रदेवसँ प्रार्थना केलनि जे हमरा बचाउ, हमरा परजापर दया करू, हमर परजा मरि रहल अछि, आइ कतेक मास भऽ गेल हमर परजा सभकें अन्न खेला, हे भगवान, हमरा अओर हमर परजापर दया करू।

अओर एतेक सभ बात सुनै छेलै, भगवान अओर भक्तमे यएह व्यवहार होइक चाही अओर यएह सत्यता अपनेबाक चाही, ओहीसँ प्रकृति सेहो गवाही दैत अछि जे मनुषमे भगवानसँ केहन भेदभाव हेबाक चाही। सभ

गदगद तँ भगवान अओर संसार सुखदमय रहत मुदा अखन तँ सभ अपन अपन पेट भरि गेल तँ दोसरक पेट भरलै कि नै तेकर चिन्ता के करैत अछि। पहिने ने एतेक बी.पी.एल. छेलै, अओर ने एतेक ए.पी.एल. सबहक गुजर समान होइ छेलै, सभ जऽ अओर जनेरक खिचरी खाइत छेलै, भऽ गेल कहियो तँ केकरो एहने नीक घर रहैत छल जे भातक मुँह देखैत छल, अखन देखू जे गरीब अमीर एक समान खाइ-पिबैत अछि। दालि भात अओर तरकारी प्रेमसँ खाइत अछि।


सन्दीप कुमार साफी (उर्फ किरण), जन्म ७ जून १९८४ पिता श्री सीताराम साफी, माता-

श्रीमती सीता देवी, गाम- मेंहथ, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी।
शिक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा), मैथिली।